मटर के स्वाद को फीका करते कीट

कृषि कुंभ (जनवरी, 2023),
खण्ड 02 भाग 08, पृष्ठ संख्या 44–46

मटर के स्वाद को फीका करते कीट

रत्नाकर पाठक[1] एवं डॉ. उमेश चंद्र[2]

(शोध छात्र) कीट विज्ञान विभाग[1] (सहायक प्राध्यापक) कीट विज्ञान विभाग[2]

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या (उत्तर प्रदेश), भारत।

Email.Id: ratnakar.1164@gmail.com

परिचय

मटर की खेती सब्जी फसल के लिए की जाती है। यह कम समय में अधिक पैदावार देने वाली फसल है, जिसे व्यापारिक दलहनी फसल भी कहते है। मटर में राइजोबियम जीवाणु मौजूद होता है, जो भूमि को उपजाऊ बनाने में सहायक होता है, इसलिए मटर की खेती भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए भी की जाती है। मटर के दानो को सुखाकर अधिक समय तक ताजा हरे के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके फलियों से निकलने वाले हरे दाने सब्जी के रूप में तथा सूखे दाने का प्रयोग सब्जी, दाल, सूप व मिक्स रोटी के रूप में किया जाता है। हरे मटर के दानों को डिब्बों में परिरक्षित कर लम्बे समय तक उपयोग में लाते हैं। मटर में प्रोटीनः 22.5 कार्बोहाइड्रेटः 62.1 कैल्सियमः 64 आयरनः 4.8 जल : 72.1 वसा–1.8 खनिज लवण–0.8 पाया जाता है, इसलिए मटर का सेवन मानव शरीर के लिए काफी लाभदायक होता है।

मटर में रेचक गुण होने के कारण यह शरीर में जमे सामान्य या अन्य विशुद्धियों को बाहर निकलने में मदद करता है, जिससे कोलेस्ट्रॉल को सामान्य बनाये रखने में सहयोग मिलता है। मटर में एंटी रिंकल और एंटी ऑक्सीडेंट गुण पाए जाते है, जो कि चेहरे की झाइयों को हटाने में मदद करते है। साथ ही इसमें कषाय गुण होने के कारण यह त्वचा के लिए लाभदायक होती है।

प्रमुख कीट

मटर की फसल पर लगने वाले प्रमुख कीट व रोकथाम के उपायः

1. माहूँ

यह मटर की फसल के गंभीर कीटों में से एक है। एफिड्स जनवरी के बाद से हमला करते हैं। वयस्क एफिड्स नरम शरीर वाले, लंबे पैर वाले, नाशपाती के आकार के, हरे पीले या गुलाबी रंग के होते हैं। हरे कोमल शरीर वाले निम्फ और वयस्क नई लताओं पर हमला करते हैं और पौधों के नए हिस्सों का रस चूसते हैं। प्रभावित पौधे बौने हो जाते हैं और फलियाँ मुड़ जाती हैं, खुरदरे धब्बे हो जाते हैं और भरने में असफल हो जाते हैं। एफिड्स के हनीड्यू स्राव से कालिखदार फफूंदी निकलती है, जो पौधों के प्रकाश संश्लेषण गतिविधि में बाधा डालती है। आकाश में बादल छाने अथवा मौसम में नमी होने से माहू का प्रकोप बढ़ जाता है। इसके छोटे–छोटे कीट झुण्ड में पौधों तने,पत्तियों

तथा फलियों पर आक्रमण कर पौधे का रस चूस लेते हैं।

बचाव व रोकथाम :

1. जैसे ही मटर के फसल पर माहू का प्रकोप दिखाई पड़े 1.50 लीटर साइपरमेथिन को 1000 को पानी में घोलकर फसल पर छिड़काव करें।
2. 1000 मिलीलीटर मेटासिस्टाक्स 25 EC को 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर खड़ी फसल पर छिड़काव करे।
3. मैलाथियान (0.05%) या डाइक्लोरवोस (0. 05%) के छिड़काव से कीट को नियंत्रित किया जा सकता है। कीट दिखते ही छिड़काव शुरू कर देना चाहिए।

चिपा (तेला)

क्षति के लक्षणः – यदि जनसंख्या अधिक है तो पत्तियाँ विकृत हो सकती हैंय पत्तियाँ खुरदुरे स्टीपलिंग से ढकी होती हैं और चांदी जैसी दिखाई दे सकती हैंय काले मल के साथ धब्बेदार पत्तियांय कीट छोटा (1.5 मिमी) और पतला होता है और हाथ के लेंस का उपयोग करके सबसे अच्छा देखा जाता हैय वयस्क थ्रिप्स हल्के पीले से हल्के भूरे रंग के होते हैं और निम्फ छोटे और हल्के रंग के होते हैं।

बचाव व रोकथाम :

1. प्याज, लहसुन या अनाज के पास रोपण से बचें जहां बहुत बड़ी संख्या में थ्रिप्स बन सकते हैं।
2. बढ़ते मौसम में थ्रिप्स को रोकने के लिए परावर्तक मल्च का उपयोग करें।
3. यदि थ्रिप्स की समस्या हो तो उपयुक्त कीटनाशक का प्रयोग करें।

फली छेदक :

अंडे मौसम की स्थिति के आधार पर अंडे का विकास 4–21 दिनों तक रहता है। औसत उर्वरता लगभग 100–300, अधिकतम 600 अंडे हैं।

लार्वाः लार्वा का रंग परिवर्तनशील होता है, गंदे हरे–भूरे से लाल रंग काय मौसम की स्थिति के आधार पर शरीर की लंबाई 15–22 मिमी और लार्वा की अवधि लगभग 19–40 दिन होती है।

प्यूपाः प्यूपा चमकीला, भूरा, महीन छेद वाला, लंबाई में 7–10 मिमी तक होता हैय कोकून मोटा, सफेद और आमतौर पर मिट्टी के कणों से ढका होता है। प्यूपा काल लगभग 12–18 दिनों का होता है। प्रति वर्ष पीढ़ियों की संख्या तीन तक पहुंचती है, हालांकि तीसरी पीढ़ी ऐच्छिक हो सकती है।

वयस्कः शरीर की लंबाई 8–11 मिमी, पंखों का फैलाव 19–27 मिमी। पेट से अधिक लंबे पंख, छत के रूप में तह। आगे के पंख पीले या भूरे–भूरे रंग के होते हैं, जिनमें सामने के किनारे पर हल्की पट्टी होती है, बेसल तीसरे पर नारंगी रंग का धब्बा होता है, और गहरे किनारे के साथ। हिंद पंख हल्के भूरे रंग के होते हैं, गहरे रंग के वेनेशन और फ्रिंज के पास गहरे रंग की दोहरी रेखाय फ्रिंज लंबा और हल्के रंग का होता है। सुनहरे–पीले बालों के गुच्छे के साथ उदर का शीर्ष। वयस्क का जीवनकाल 20 दिनों का होता है

क्षति के लक्षणः

1. हरी फलियों पर यह कीट अधिक गंभीर होता है, विशेषकर परिपक्वता की अवस्था में। सूंडियाँ फलियों में छेद करके बीजों को खा जाती हैं।
2. नए फूलों और नई फलियों का समय से पूर्व गिर जाना ।

3. जैसे ही फली के भीतर लार्वा विकसित होता है, मल जमा हो जाता है जिससे फली पर नरम, सड़े हुए धब्बे बन जाते हैं।
4. बीज या तो आंशिक रूप से या पूरी तरह से खाए जाते हैं, और काफी फ्रास और रेशम मौजूद होते हैं।
5. पुरानी फलियों को भूरे रंग के धब्बे से चिह्नित किया जाता है जहां लार्वा प्रवेश कर गया है ।

बचाव व रोकथाम :

1. ब्यूवेरिया बेसियाना अन्य जैव–कीटनाशक बैसिलस की तुलना में कीट के खिलाफ काफी अधिक प्रभावी पाया गया है ।
2. संक्रमण की प्रारंभिक अवस्था के दौरान कैटरपिलर और प्यूपा को हाथ से चुनने से कीट क्षति कम हो जाती है।
3. इस कीट से बचाव के लिए सुमिसीडीन की 1.5 लीटर मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें ।
4. 50 प्रतिशत घुलनशील सेविन की 2 किलोग्राम मात्रा को 1000 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

पत्ती में सुरंग बनाने वाला कीटः

क्षति के लक्षणः– प्रौढ़ मक्खी चमकीली गहरे, हरे रंग या काली होती है। इसका वक्ष काले रंग का होता है तथा किनारों पर पीले निशान होते है।अगले पंख पारदर्शक होते है। पिछले पंख हाल्टियर्स में बदल जाते है तथा पीले होते हैं। इस कीट की आखे बड़ी तथा उन्नत होती है। इलियाँ पत्तियों पर असंख्य छेद बनाती है, छेद की संख्या ज्यादा होने पर छोटे कोमल पौध मुरझाकर सूख जाते है तथा बड़े पौधों की पत्तियाँ सूख जाती है। इस कीट की इली पत्तियों के बीच में घुसकर पत्तियों के आंतरिक भाग को खा कर नष्ट कर देती हैं,और पत्तियों में सुरंगे बन जाती है। अधिक प्रकोप होने की दसा पर फूल तथा फली लगना काफी कम हो जाता है, इस कीट के प्रकोप से मटर की फसल को बहुत हानि पहुचती है।

बचाव व रोकथाम :

1. नई पत्तियों के निकलने पर पौधों पर डाइक्लोरवोस (0.05%) का छिड़काव करना अत्यधिक लाभकारी होता है। रोपण से एक दिन पहले फोरेट 10 जी (1 किग्रा ए.आई./एकड़) का प्रयोग लीफ माइनर की लार्वा आबादी को कम करने में प्रभावी है।
2. जैसे ही मटर के फसल पर पत्ती में सुरंग बनाने वाला कीट का प्रकोप दिखाई पड़े 1.50 लीटर साइपरमेथिन को 1000 को पानी में घोलकर फसल पर छिड़काव करें ।
3. 1000 मिलीलीटर मेटासिस्टाक्स 25 EC को 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर खड़ी फसल पर छिड़काव करे।